नाम- अंशु पाठक - कक्षा- 9-D रोलनम्बर- 9407
RFS ID:- ANSHU.222009051@RFS.EDU.IN

"स्वच्छ और हरे पर्यावरण के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी"

स्वच्छ एवं हरे पर्यावरण का पर्याय है चारों तरफ हरियाली एवं खुशहाली। परन्तु प्रकृति का अत्याधिक दोहन करके हम ने पर्यावरण को नष्ट कर दिया है जिसके दुषपरिणाम हम सब महसूस कर रहे हैं। वायु की गुणवता इतनी खराब हो गई है जिसकी वजह से दिल्ली के आस-पास हजारों लोग श्वास की बीमारी से पीड़ित है। इसी वायु प्रदूषण के कारण उत्पन्न कोहरे के कारण हजारों परिवार अपने प्रिय-जन को सड़क दुर्घटना में खो देते हैं।

प्राचीन काल में पर्यावरण ऐसा नहीं था। इसको हमने ही खराब किया है। अपने सुख-सुविधा एवं औद्योगि-करण के नाम पर हर वर्ष अनगिनत पेड़ काटे हैं। पर्वत के पर्वत को मैदान में परिवर्तित कर दिया है। वर्तमान में जिस प्रकार से पर्यावरण दूषित हो रहा है उसने सबकी आँख खोल दी है। अब वक्त हो गया है जिसमें विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को पर्यावरण को स्वच्छ बनाने में उपयोग करना चालू कर दिया है क्योंकि अभी नहीं तो कभी नहीं। इसमें सरकार ने भी नए नियम बनाए है एवं पर्यावरण के नियम कठोर किए हैं। पर्यावरण के लिए नई-नई तकनीक का आविष्कार हो रहा है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स का उपयोग फसल एवं जंगलों को बचाने में उपयोग होने लगा है। तने से लेकर फल तक विभिन्न प्रकार के सेंसर लगे होने से कंप्यूटर सिस्टम में नई तकनीक से स्वचलित उपकरण फसल एवं जंगल की देखभाल कर सकते हैं जिससे अधिक उपज एवं हरियाली रहेगी।

कटाई के बाद बची फसल एवं बायोवेस्ट से नई तकनीक के द्वारा बायोगैस एवं बायोफ्यूल बनाया जा रहा है। जिसे अन्य ऊर्जा के रूप में उपयोग किया जा रहा है। सोलर एवं विन्ड ऊर्जा का प्रयोग काफ़ी समय से हो रहा

है परंतु अब बड़े दर्जे पर इनका उपयोग चालू हो रहा है। कुछ रेलवे स्टेशन एवं पैदलपथ पर सेंसर के द्वारा भी ऊर्जा उत्पादित की जा रही है जिसमें पैदल चलने पर सेंसर से ऊर्जा उत्पन्न हो रही है।

वायु-प्रदूषण का मुख्यतः कारण हाइड्रोकार्बन ईंधन का उपयोग करना है। जिसमें कार्बन-मोनो-ऑक्साइड जैसी ज़हरीली गैस का निकास होता है जो हमारे स्वास्थ्य पर बहुत ज्यादा प्रतिकूल प्रभाव डालती है। नयी तकनीक का उपयोग करके कार्बन उत्सर्जन को कम किया है। हाइड्रोजन चलित एवं बैट्री चलित वाहन इसी दिशा में बढ़ाया हुआ कदम है। विज्ञान ने यहाँ तक तकनीक विकसित कर ली है जिसमें वातावरण में उपस्थित कार्बन को शोषित कर लिया जाता है।

इन सभी प्रौद्योगिकियों से हम हमारी प्रकृति एवं पर्यावरण का संरक्षण कर सकते हैं। हम हमारे प्राकृतिक संसाधन जैसे वायु, जल, मिट्टी की हम रक्षा कर सकते हैं। इससे हम आने वाली पीढ़ी को संरक्षित कर पाएंगे अन्यथा वो वक्त दूर नहीं जब भूमण्डलीय ऊष्मीकरण एवं ओजोन परत का विनाश के साथ प्राकृतिक जल संसाधनों की कमी के कारण यह पृथ्वी रसातल में डूब जाएगी।

प्रकृति है तो जीवन है,
विज्ञान है तो परिवर्तन है।
प्रौद्योगिकी से संरक्षण है,
पर्यावरण को हमारा नमन है॥